Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 13, Issue 1 | May 2025 - October 2025 | pp. 102-108

राजस्थान में पर्यटन विकास : अवसर एवं चुनौतियाँ

डॉ. सुरेन्द्र सिंह
सह आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

शोध सारांश

पर्यटन भारतीय परम्परा का आरम्भ से ही एक हिस्सा रहा है। बगैर चिमनी और धुएँ के इस उद्योग में उत्पादन कुछ भी नहीं होता फिर भी आय होती है और बहुत से लोगों को रोजगार भी मिलता है। पर्यटन के महत्व को देखते हुए ही भारत सरकार व राजस्थान सरकार ने इसे एक उद्योग का दर्जा प्रदान किया है। राजस्थान जैसे असीमित पर्यटन संभावनाओं वाले प्रदेशों में तो पर्यटन वैसे भी अपनी महत्वपूर्ण आर्थिक भूमिका निभा सकता है। विदेशी मुद्रा एवं रोजगार प्रदान करने में सक्षम पर्यटन आज विश्व का तेजी से बढ़ने वाला उद्योग है। पर्यटन उद्योग में सेवा एवं संचालन व्यवस्था, विपणन और संचार, नीति और नियोजन तथा पर्यटन के सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय व राजनीतिक प्रभाव सभी आयाम पर्यटन उद्योग को प्रभावित करते हैं। राजस्थान में उद्योगों के साथ-साथ पर्यटन विकास भी काफी विकसित हुआ है। यहाँ के प्रमुख शहर जैसे जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, बीकानेर, अलवर आदि अपनी-अपनी ऐतिहासिक परम्पराओं व कलाओं के लिए जाने जाते है। इसी प्रकार राज्य में अन्य छोटे-छोटे कस्बों की हवेलियों की चित्रकारियाँ भी मनमोहक है और राज्य के विभिन्न त्योहार, उत्सव, मेले, गीत-संगीत, नृत्य, कला-कृतियाँ आदि सभी बरबस देशी व विदेशी पर्यटकों को सदियों से अपनी तरफ आकर्षित करते रहे है और भविष्य में भी करते रहेंगे। राजस्थान में पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं। पर्यटकों को केवल आकर्षित करने की आवश्यकता है। आय में वृद्धि होने से पर्यटन के प्रति लोगों की रुचि बढ़ेगी, जिससे पर्यटन विकास की गति पकड़ेगा। पर्यटकों के आगमन से प्रदेश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी, प्रदेश खुशहाल एवं समृद्ध होगा। राजस्थान के लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। इसके अलावा पर्यटन राज्य में आधारभूत ढांचा विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संकेताक्षर—*पर्यटन, ऐतिहासिक स्थान, राजपूताना, पर्यटक, यात्रा, उद्योग*

प्रस्तावना

मनुष्य की किसी नए स्थल के बारे में जिज्ञासा सहज प्रवृति है। मनुष्य की यह सदैव जिज्ञासा रहती है कि वह उस स्थान विशेष के बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करे जिसके बारे में उसने सुना या पढ़ा है। मनुष्य का जिज्ञासु मन नयनाभिराम धार्मिक स्थलों, ऐतिहासिक स्थलों, स्मारकों, दूर तक फैले रेत के अथाह समन्दर, नदियों, जल प्रपातों, भव्य प्रासादों, राजमहलों, वनों, वन्य जीवों अभयारण्यों एवं प्रकृति के नानाविध रूपों को जानने, समझने, आत्मोत्सर्ग करने, सभ्यताओं एवं संवर्द्धन का आनन्द लेने के प्रति उत्सुक एवं लालायित रहा है। साथ ही स्थान-विशेष पर व्यापार व रोजगार की संभावनाओं के बारे में जानकारी, स्वास्थ्य एवं शिक्षा का लाभ, पर्यावरण व मनोरंजन से संबंधित पूर्ण जानकारी की लालसा ने ही पर्यटन की सोच को जन्म दिया है। अपरिचित स्थानों, सभ्यता एवं संवर्द्धन को जानने, समझने परखने की जिज्ञासा वस्तुतः मनुष्य की स्वभावगत प्रवृति का ही परिणाम है—पर्यटन।

प्राचीन काल में मनुष्य की यात्राएँ कई कारणों से रही है और उन यात्राओं ने अनेक बार महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ भी मनुष्य की

झोली में डाली है। जाने अनजाने ही कोलम्बस ने नई दुनिया के रूप में साहसिक यात्रा के जरिये अमेरिका की खोज कर ली, तो वास्को-डी-गामा ने भारत को खोज निकाला। वस्तुतः इतिहास के पृष्ठ महान साहसिक यात्राओं और कारनामों से भरे पड़े है। इन यात्राओं ने पूरे विश्व के लिए ज्ञान, व्यापार और अनुभव ने नये द्वार खोले है।

मध्यकाल में धार्मिक उद्देश्यों से यात्रा करने का वर्णन मिलता है। हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम आदि धर्मों के प्रचार-प्रसार के लिए यात्राओं का क्षेत्र व्यापक हुआ। शंकराचार्य ने तो देश के विभिन्न भागों की यात्रा इसी उद्देश्य से की थी कि सभी को भावनात्मक एकता के सूत्र में बांधा जाये। बुद्ध ने भी बुद्धत्व का संदेश गांव-गांव घूम कर दिया था। इन धार्मिक उद्देश्यों ने यात्रा के वास्तविक अर्थ का विस्तार किया। जिसकी परिणति ही बाद में पर्यटन के रूप में उभरकर सामने आयी।

आधुनिक युग में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सड़क, हवाई यातायात तथा संचार के साधनों में हुई प्रगति के फलस्वरूप पर्यटन का खासा विकास हुआ है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से ही पर्यटन समूचे विश्व में एक आर्थिक सामाजिक पहलू के रूप में उभरा है। पर्यटन किसी भी राष्ट्र के लिए न केवल महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है बल्कि विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में सांस्कृतिक परिवर्तन लाने का महत्वपूर्ण माध्यम भी है।

परिचय

पर्यटन को प्रारंभ में एक विशिष्ट प्रकार के खेल अथवा मनोरंजन के रूप में माना जाता रहा है। यूरोप और भारत में तो शिक्षा के लिए भी देशाटन या पर्यटन करना आवश्यक माना जाता था। पर्यटन का उचित विचार एवं तत्व इससे संबंधित सैद्धान्तिक एवं प्रसिद्ध ढाँचे या स्वरूप का ज्ञान करवाने के लिए आवश्यक है। पर्यटन के बारे में एक मान्यता इसके वर्तमान एवं भावी स्वरूप एवं महत्व की ओर स्वतः ही इंगित करती है। इस मान्यता के अनुसार पर्यटन वह सुनहरा रथ है जिस पर सवारी कर कोई भी देश विदेशी मुद्रा प्राप्त कर सकता है। वैसे भी आज कौनसा देश ऐसा होगा जिसे अपनी अर्थव्यवस्था के विकास की चाह नहीं है? सभी यह चाहते हैं कि अधिक से अधिक विदेशी मुद्रा प्राप्त कर विकास को गति दी जाए। यह पर्यटन का महत्वपूर्ण पहलू है कि इससे बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है परन्तु समग्र सत्य यही नहीं है, पर्यटन दरअसल विकास को तो बढ़ावा देता ही है, यह व्यक्ति के समग्र विकास का भी आधार है।

जैसे-जैसे पर्यटन की सोच का विकास हुआ है, पर्यटन से जुड़ी विभिन्न अन्य क्रियाओं यथा आवास, भोजन, परिवहन आदि व्यवसायों का भी विकास त्वरित गति से होने लगा है। आम तौर पर पर्यटन एवं यात्रा को एक ही मान लिया जाता है जबकि इन दोनों में मूलभूत अंतर है। यात्रा का उद्देश्य व्यवसाय या अन्य कुछ भी हो सकता है परन्तु पर्यटन का अर्थ है मनोरंजन, ज्ञानवर्धन, नया देखने की जिज्ञासा को शांत करने के लिए भ्रमण। पर्यटन बिना विद्यालय व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करने के साथ ही अपने परिवेश से अलग लोगों की संस्कृति, परम्पराओं, मान्यताओं, खान-पान आदि के बारे में बहुत कुछ नयी जानकारियाँ प्रदान करता है।

वास्तव में देखा जाए तो तीर्थ यात्रा, खोजी प्रकृति, शिक्षा व ज्ञानप्राप्ति के लिए मनुष्य की भूख, मनोरंजन, व्यवसाय-उद्योग के साथ ही साहसिक गतिविधियों के रूप में पर्यटन की सोच मनुष्य में आदिकाल से ही रही है। मोटे तौर पर पर्यटन की परिभाषा करें तो लगातार एक वर्ष या उससे कम समय तक सैर-सपाटे, व्यापार तथा अन्य कार्यों के लिए अपने रहने के सामान्य स्थान से बाहर घूमने तथा ठहरने वाले व्यक्तियों से जुड़ी गतिविधियों को पर्यटन कहा जा सकता है।

राजस्थान में वर्तमान पर्यटन परिदृश्य

भारत आरंभ से ही पर्यटन की सोच से जुड़ा रहा है। यहां के चारों धामों के तीर्थस्थल संभवतः पर्यटन की सोच की ही परिणति है। वर्षों पहले जब आवागमन के साधनों का विकास नहीं हुआ था, लोग धार्मिक आस्थावश दुर्गम स्थलों पर स्थित तीर्थस्थलों पर जाया करते थे। इस बहाने निवासस्थल से दूर के स्थानों की यात्रा तो हो ही जाती थी, साथ में रास्ते में पड़ने वाले इलाकों की सभ्यता व संस्कृति, वहां के रहन-सहन से भी साक्षात्कार हो जाता था। इससे न केवल मनुष्य की जानकारियों का दायरा विस्तृत होता, बल्कि एक रोमांच का भी अनुभव होता था। हिन्दू तीर्थस्थलों के चार धाम, चारों अलग-अलग दिशाओं में होना, इस बात को भी पुष्ट करते हैं कि इनकी स्थापना के पीछे मनुष्य को अपने निवास स्थान के अतिरिक्त दूसरे स्थानों से अवगत कराने के साथ-साथ घर से बाहर की दुनिया को देखने के अवसर दिलाना रहा है।

तीर्थयात्रा भी वस्तुतः पर्यटन की ही उपज है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता।

आन, बान और शान की भूमि राजस्थान भी आरंभ से ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। उस समय, जब पर्यटन शब्द का अस्तित्व सामने नहीं आया था, तब से ही राजस्थान के प्रति लोगों में आकर्षण रहा है। संभवतः राजस्थान ही एकमात्र ऐसा प्रदेश है जहां स्वतंत्रता से पूर्व ही पर्यटन का व्यवस्थित रूप उभर कर सामने आया। राजा महाराजाओं ने अपने किलों, गढ़ों और महलों को विदेशी पर्यटकों के लिए खोलने की शुरुआत आजादी से पूर्व ही कर दी। उनकी इस सोच के पीछे कारण था अपनी रियासत में आर्थिक संसाधनों का प्रयोग करना। इस लिहाज से पर्यटन की शुरुआत स्वतंत्रता से पूर्व ही राजस्थान में हो गयी। हालांकि आज का विशाल राजस्थान 1947 से पूर्व अलग-अलग टुकड़ों में बंटा था और आजादी के पश्चात् 30 मार्च 1949 को सरदार पटेल के हाथों वर्तमान राजस्थान का उद्घाटन हुआ। परन्तु इससे पूर्व भी यह जांगल प्रदेश, मत्स्य प्रदेश, शिवदेश, प्राग्वाड़, बांगड़, अर्कुट, अड़ावला, राजपूताना आदि के अलग-अलग नामों से सैलानियों में जाना जाता था। यहां के तीर्थस्थल विदेश के लोगों में श्रद्धास्थल रहे है। तीर्थाटन के रूप में देशाटन की परम्परा का निर्वाह करते लोग दूर-दराज से राजस्थान में प्राचीन काल से आते रहे हैं। कालान्तर में तीर्थाटन पर्यटन में परिवर्तित होता गया और तीर्थाटन का उद्देश्य भी यहां पर्यटन हो गया।

वैसे भी अपने समृद्ध पर्यटन स्थलों के कारण राजस्थान का पूरे भारत में विशिष्ट स्थान रहा है। इस बात को उन सभी ने माना भी है जो एक बार राजस्थान आये या फिर राजस्थान के बारे में सुना। यह राजस्थान की भूमि का आकर्षण ही रहा है कि सुप्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टॉड ने राजस्थान के अतीत व इसके गौरवशाली वैभव के बारे में घुमक्कड़ी करके लिखा हैं। यही नहीं, कर्नल टॉड राजस्थान आए थे यहां के इतिहास की खोज करने परन्तु फिर यहां के आकर्षण में इस प्रकार बंधे कि यहीं के होकर रह गए। उन्होंने राजस्थान के इतिहास, यहां की कला-संस्कृति, सुन्दर व मनोरम पर्यटन स्थलों के बारे में घूम-घूम कर अनुसंधान करके लिखा हैं।

त्याग, तपस्या और बलिदान की गाथाओं को अपने में समेटे शौर्य और साहस की धरती राजस्थान आरंभ से ही पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र रही है। कहीं दूर तक पसरा रेत का समन्दर तो कहीं शीतलता का एहसास करती झीलें। करधनी की तरह ऊंची-नीची अरावली की पर्वत श्रृंखलाएं तो कहीं पठार और मैदान। कितनी अनूठी है भूमि राजस्थान की जहां कहीं मीलों तक पसरा रेत का समन्दर और उसके ऊपर पंक्तिबद्ध उड़ान भरती कुरजां तो कहीं जयसमन्द, नक्की जैसी झिलमिलाती गहरी नीली झीलें और उनमें अठखेलियां करती मछलियाँ।

राजस्थान का नाम लेते ही आंखों के सामने मानो साकार हो उठती है वीरों की कहानियाँ। राजस्थान, जिसका नाम लेते ही खड़कते खांडे बिजलियों की तरह कौंध उठते हैं और घाटियों, पठारों को गुंजाती हुई घोड़ों की टापें, मेघ गर्जन-सा करने लगती है। जहां धधकती अग्नि ज्वालाओं में सर्वस्व का होम करने वाली अखण्ड सौभग्यवती पद्दिनियां और केसरिया-कसूमल परिधानों वाले, गले में तुलसी माला तथा शीष पर शालिग्राम धारण किए मातृभूमि की रक्षा में प्राणोत्सर्ग करते हुए जुझारू साक्षात् प्रतीत होते हैं। यही वह भूमि है जिसके कण-कण में त्याग और बलिदान की ऐसी गाथाएँ मिलती है जो अन्यत्र कहीं नहीं हैं। पन्ना धाय के त्याग, प्रताप के शौर्य, कुंभा के पराक्रम की भूमि राजस्थान का प्राकृतिक परिवेश जितना वैविध्यपूर्ण है उतना ही सरस-सजीला है इसका सांस्कृतिक वैभव। शूरवीरों और पराक्रमी योद्धाओं की अनूठी गाथाओं को अपने आंचल में समेटे राजस्थान की धरती के कण-कण में पन्ना धाय के त्याग, कुंभा और राणा जैसे सूरमाओं का पराक्रम, राणाप्रताप का स्वाभिमान, हमीर का हठ, जयमल पत्ता की कुर्बानी, भक्तिमती मीरा की अनूठी प्रभु आराधना, पद्मिनी का सौन्दर्य, महेन्द्र-मूमल की प्रणय गाथा, ढोला-मरवण के अजर-अमर प्यार की कहानियाँ छुपी हुई है।

एक और जहां 800 वर्ष से भी अधिक पुराना जैसलमेर का स्वर्ण दुर्ग है तो दूसरी ओर महाराणाओं की शौर्य गाथाओं का प्रतीक चित्तौड़गढ़ का शानदार किला राजस्थान की अनूठी धरोहर। ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पन्न ऐतिहासिक इमारतें, स्थापत्यकला में बेजोड़ जैसलमेर की हवेलियाँ, प्राचीन मन्दिर आज भी मोह लेते हैं। रंगीली है धरती राजस्थान की, जहां कहीं घना पक्षी अभयारण्य में देश-विदेश के पक्षियों की मनोहारी छवि दिखाई देती है तो कहीं रणथम्भौर और सरिस्का जैसे बाघों के अभयारण्य है। कहीं गोडावण की दौड़ तो कहीं थिरकते मोर। कहीं मेनाल सरीखे झरनों का आकर्षण

है तो कहीं हिमालय के पानी को धोरां तक लाने में भागीरथी प्रयासों की गाथा कहती दिखाई देती है- इन्दिरा गांधी नहर। हनुमानगढ़ जिले में स्थित कालीबंगा में मोहन-जोदड़ो सभ्यता के समकालीन प्राचीन अवशेष तो दूसरी ओर 13 लाख वर्ष पुराने वुड फोसिल्स जैसलमेर के पास देखे जा सकते है। भारत का एकमात्र ब्रह्माजी का मन्दिर भी राजस्थान के पुष्कर में है। यहां के कोने-कोने में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पन्न इमारतों का पूरा एक खजाना है।

समूह-संस्कृति के परिचायक है यहां के तीज-त्योहार, मेले और उत्सव। कहीं घूमर की मोहक अदाएँ हैं तो कहीं फागुन की मस्ती में चंग की थाप पर गीदड़ नृत्य का अपना आकर्षण है। कहीं हवाई नृत्य के रोमांचक करतब है तो कहीं विद्युत गति-सा तेराताली नृत्य मन को मोह लेता है। अलगोजे की मधुर ताल के साथ मोरचंग, भपंग और कमायचा जैसे लोकवाद्यों की झंकार मन के तारों को झंकृत-सी कर देती है। पग-पग पर संस्कृति की अनूठी परम्पराओं की भूमि राजस्थान की हस्तकला, यहां की वेशभूषा—सभी कुछ ऐसी विशेषताएं लिए हैं कि यहां आने वाला बस यहीं का होकर रह जाता है। राजस्थान के बारे में सुप्रसिद्ध कवि कन्हैयालाल सैठिया ने ठीक ही कहा है—"आ तो सुरगा नै सरमावै, इण पर देव रमणनै आवै, धरती धोरां री।"

पद्मिनी जौहर की भूमि कैसी है? राजस्थान के त्याग की भूमि कैसी है? मीरां की भूमि, हल्दीघाटी के इतिहास की भूमि, ख्वाजा साहब के उर्स की भूमि, घूमर, तेरताली जैसे नृत्यों की सांस्कृतिक भूमि आदि के बारे में जिज्ञासाओं ने सैलानियों को आकर्षित किया और राजस्थान के अलग-अलग रियासतों में बंटा होने के बावजूद स्वतंत्रता पूर्व से ही देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों की संख्या इस बात की गवाह है।

आज भारत में पर्यटन सबसे बड़ा सेवा उद्योग है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में जहाँ इसकी राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 5 प्रतिशत और भारत के कुल रोजगार में 7.6 करोड़ नौकरियाँ प्रदान करता है। वर्ष 2024 के दौरान भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन की संख्या वर्ष 2022 में रहे 6.44 मिलियन की तुलना में बढ़कर 9.95 मिलियन हो गई। देश के लिए विदेशी मुद्रा उपार्जक के रूप में पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्ष 2022 में पर्यटन से अर्जित विदेशी मुद्रा आय वर्ष 2021 में 8.797 बिलियन अमेरिकी डालर की तुलना में 17.611 बिलियन अमेरिकी डॉलर थी, जिसमें 100.19 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। साथ ही भारत में वर्ष 2022 में आये 2.16 बिलियन पर्यटकों के स्थान पर 2023 में 2.51 बिलियन घरेलू पर्यटक आये। भारत में पर्यटकों की बढ़ती संख्या तथा इससे बढ़ती आय की वजह से भारत वर्ष 2024 में वैश्विक यात्रा और पर्यटन विकास तालिका में 39वें स्थान पर आ गया है, जो कि भारत में पर्यटन उद्योग के विकसित होने का प्रमाण सिद्ध करती है।

भारत की भांति राजस्थान में भी पर्यटकों की संख्या प्रतिवर्ष बढती जा रही है। वर्ष 2024 के दौरान राजस्थान में 21.91 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 20.72 लाख विदेशी पर्यटक तथा 28.45 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 2300.84 लाख घरेलू पर्यटक सहित कुल 2320.72 लाख पर्यटक राजस्थान भ्रमण हेतु आये। वर्ष 2009 से 2024 तक राजस्थान में भ्रमण हेतु आये देशी व विदेशी पर्यटकों की संख्या का तुलनात्मक विवरण नीचे दिये गये तालिका-1 पर उपलब्ध है।

तालिका 1 : राजस्थान में आए देशी एवं विदेशी पर्यटकों का तुलनात्मक विवरण

क्र. सं.	वर्ष	पर्यटक यात्राएँ			गत वर्ष की तुलना में परिवर्तन प्रतिशत में		
		स्वदेशी	विदेशी	योग	स्वदेशी	विदेशी	योग
1	2	3	4	5	6	7	8
1	2009	25558691	1073414	26632105	-9.87	-27.36	-10.74
2	2010	25543877	1278523	26822400	-0.06	19.11	0.71
3	2011	27137323	1351974	28489297	6.24	5.74	6.21
4	2012	28611831	1451370	30063201	5.43	7.35	5.52

क्र. सं.	वर्ष	पर्यटक यात्राएँ			गत वर्ष की तुलना में परिवर्तन प्रतिशत में		
		स्वदेशी	विदेशी	योग	स्वदेशी	विदेशी	योग
5	2013	30298150	1437162	31735312	5.89	-0.98	5.56
6	2014	33076491	1525574	34602065	9.17	6.15	9.03
7	2015	35187573	1475311	36662884	6.38	-3.29	5.96
8	2016	41495115	1513729	43008844	17.93	2.60	17.31
9	2017	45916573	1609963	47526536	10.66	6.36	10.50
10	2018	50235643	1754348	51989991	9.41	8.97	9.39
11	2019	52220431	1605560	53825991	3.95	-8.48	3.53
12	2020	15117239	446457	15563696	-71.05	-72.19	-71.09
13	2021	21988734	34806	22023540	45.45	-92.20	41.51
14	2022	108328156	396684	108724840	392.65	1039.70	393.68
15	2023	179051925	1699869	180751794	65.29	328.52	66.25
16	2024	230000084	2072407	232072491	28.45	21.92	25.18

उपरोक्त परिशिष्ट से स्पष्ट है कि राजस्थान में आने वाले देशी पर्यटकों की संख्या 2009, 2010 एवं 2020 को छोड़कर 2009 से लगातार बढ़ी है तथा विदेशी पर्यटकों की संख्या वर्ष 2013, 2015, 2019, 2020 एवं 2021 में घटी हैं वर्ष 2019, 2020, 2021 में पर्यटकों की संख्या घटने का मुख्य कारण विश्वभर में फैली कोरोना महामारी रहा है लेकिन अन्य वर्षों में पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ी है। साथ ही राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए राज्य सरकार लगातार प्रयासरत है। पर्यटन विभाग की विभिन्न योजनाओं हेतु बजट लगातार बढ़ाया जा रहा है। वर्ष 2018-19 में 10543. 44 लाख रुपये बजट का प्रावधान था जो वर्ष 2022-23 में बढ़ाकर 27255.91 लाख रुपये कर दिया गया है।

पर्यटन विकास के अवसर

राजस्थान में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों की बहुतायत है। प्राचीन स्मारक, किले, हवेलियाँ, महल, इमारतें, संगीत, लोकनृत्य, हस्तकला, मन्दिर, मस्जिद पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यदि राज्य में पर्यटन के सम्बन्ध में पर्यटकों को पर्याप्त स्वागत, आत्मीयता और सुविधाएं दी जाये तो पर्यटन विकास के अवसर बढ़ेंगे। साथ ही खेलकूद एवं साहसिक कार्य जैसे—मरु क्षेत्र में ऊँटों की सवारी एवं दौड़, जलक्रीडा, नौका विहार प्रतियोगिता, पर्वतारोहण, मछली आखेट प्रतियोगिताएँ पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन रही हैं।

राजस्थान में विविध प्रकार के वन्य जीवों, पशु-पक्षियों एवं मरु वन्य जीवों को देखने का पर्यटकों में आकर्षण बढ़ रहा है। साथ ही राजस्थान के ऐतिहासिक एवं रमणीक स्थलों पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन, सेमिनार एवं संगोष्ठियाँ आयोजित करवाने में राज्य सरकार रुचि ले तो राजस्थान में पर्यटन तेजी से बढ़ेगा।

पर्यटन विकास के समक्ष चुनौतियाँ

राजस्थान में आज भी पर्यटन स्थलों की विविधता व प्राकृतिक समृद्धि तथा निरंतर बढ़ती पर्यटकों की संख्या के बावजूद पर्यटन उद्योग का पूरा लाभ राज्य की अर्थव्यवस्था को नहीं मिल रहा है। इसके मूल में जो कारण है वह यही है कि आज भी देश व प्रदेश में पर्यटन उद्योग में प्रबन्ध सुव्यवस्थित नहीं है। इसलिए पर्यटन उद्योग का लाभ आम आदमी को नहीं मिल पा रहा है। भारत में आज भी केन्द्र व राज्यों की पर्यटन नीतियों में भिन्नता, औद्योगिक नीतियों का क्रियान्वयन सही नहीं होना, पर्यटन की आधारभूत सुविधाओं का कम विकसित होना, पर्यटन-वातावरण निर्माण में कमी आदि ऐसे तत्व है जिनके कारण पर्यटन उद्योग को जो लाभ मिलने चाहिए, वे नहीं मिल

पा रहे है। राजस्थान में पर्यटन विकास से ही पर्यटन उद्योग को सुसंगठित किया जा सकता है तथा इससे राजस्थान राज्य की अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ किया जा सकता है।

आज भी राज्य के अधिकांश पर्यटन स्थलों तक जाने वाली सड़कें टूटी हुई हैं। पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों के रुकने की कोई उचित एवं सुरक्षित व्यवस्था का इंतजाम नहीं होता है। साथ ही पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा की पुख्ता व्यवस्था नहीं होती है। पर्यटकों के सामने हमेशा लूटपाट का भय बना रहता है। राजस्थान राज्य के पर्यटन स्थलों की सुरक्षा व्यवस्था हेतु पर्यटक पुलिस की व्यवस्था नहीं होना भी पर्यटन विकास की एक मूलभूत कमी मानी जा सकती है।

सरकारी पहल और नीतियाँ

राजस्थान में पर्यटन एवं आतिथ्य क्षेत्र को उद्योग के दर्जे का पूरा लाभ दिया गया है। पर्यटन क्षेत्र राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 12 प्रतिशत का योगदान देता है। वर्ष 2022 में राजस्थान घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के मामले में 7वें स्थान पर रहा। 9 स्थलों को यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया गया है।

तीर्थयात्रा पुनरुद्धार एवं आध्यात्मिक संवर्धन अभियान (प्रशाद) योजना के अन्तर्गत पुष्कर/अजमेर के एकीकृत विकास को एक परियोजना के रूप में अनुमोदित किया गया। इसके अतिरिक्त, बीकानेर जिले में श्री करणी माता मन्दिर और कोटा जिले के बूढ़ाहिता में सूर्य मन्दिर को प्रमुख स्थलों के रूप में मान्यता दी गई। स्वदेश दर्शन 2.0 के अन्तर्गत राजस्थान में विकास के लिए बूंदी (केशोरायपाटन) और जोधपुर को चिह्नित किया गया है। साथ ही जयपुर, उदयपुर, कोटा और जोधपुर में 4 जैविक उद्यान भी विकसित किए गए हैं।

सुझाव

यद्यपि पर्यटन को भारत सरकार एवं राजस्थान की सरकार ने उद्योग का दर्जा तो दे दिया है किन्तु पर्यटन का उद्योग के रूप में विकास नहीं हो पाया है। पर्यटन के विकास के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं—

- राजस्थान में पर्यटन विकास की संभावनाओं का पता लगाना चाहिए।
- उद्योग के रूप में पर्यटन की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करना चाहिए।
- वर्तमान पर्यटन के अन्तर्गत किन-किन गतिविधियों का संचालन किया जाता है और कैसे किया जाता है का विश्लेषण करना चाहिए।
- पर्यटन विकास के द्वारा रोजगार की संभावनाओं का पता लगाना चाहिए।
- पर्यटन विकास के लिए पर्याप्त सार्वजनिक खर्च कितना होना चाहिए, इसका अध्ययन करना बहुत जरूरी है। इसी आधार पर खर्च तय होना चाहिए।
- वर्तमान में सरकार द्वारा पर्यटन को एक मनोरंजन माध्यम के रूप में अथवा सहायक व्यापारिक कार्य के रूप में देखा जाता है जो इसके व्यावसायिक स्वरूप को अस्थायी सिद्ध करता है जबकि पर्यटन को एक स्थायी व्यावसायिक कार्य के रूप में स्थापित करना चाहिए।
- पर्यटन उद्योग के अधिकाधिक विकास के लिए इसके नवीन और सर्वथा व्यावहारिक प्रबंधकीय ढांचे का विकास चाहिए।
- पर्यटन उद्योग में पूंजी और लाभ का प्रबंधकीय दृष्टि से मूल्यांकन करना जरूरी है।
- राजस्थान में पर्यटन के नए क्षेत्र कौन-कौन से हो सकते है इसका पता लगाना अर्थात पर्यटन विकास के अवसरों का पता लगाना चाहिए।
- पर्यटन विकास में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना तथा उनका समाधान खोजना चाहिए।
- पर्यटन-परिवहन, आवास-प्रबंध तथा सुरक्षा व्यवस्था की स्थिति का अध्ययन करके उनका प्रभावी क्रियान्वयन करना चाहिए।

राजस्थान की विभिन्न संस्कृतियों एवं प्राकृतिक विविधता का आकर्षण पर्यटन उद्योग के मुख्य स्रोत है। अन्य उद्योगों की भांति पर्यटन उद्योग के विकास में अधिक नियोजन की आवश्यकता नहीं है। दरअसल इस उद्योग के विस्तार की भी कोई सीमा नहीं है और आधुनिक पर्यटन में तो विभिन्न प्रकार की चीजें स्वयं अपना स्थान बनाने लगी है। इस रूप में यह आवश्यकता है कि पर्यटन उद्योग का लाभ स्थानीय लोगों को मिले और इसके लिए इसे अन्य उद्योगों की भांति स्थापित करना राजस्थान में पर्यटन विकास को बढ़ावा देने के लिए जरूरी है।

निष्कर्ष

राजस्थान का विशाल रेगिस्तान एवं प्राकृतिक छटाएँ, ऐतिहासिक राजपुताना दुर्ग, राजमहलों का इतिहास अनायास ही देशी विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं इसलिए आज राजस्थान में पर्यटन उद्योग लगातार बढ़ता जा रहा है। यदि राज्य सरकार पर्यटन के विकास के आने वाली समस्याओं का तत्परता से समाधान करे तो यह उद्योग और अधिक आय एवं रोजगार दे सकता हैं जैसे-पर्यटन स्थलों पर मूलभूत सुविधाओं का विकास, लपकों से सुरक्षा, चिकित्सा व्यवस्था, ठहरने की एवं परिवहन की उचित तथा वहनयोग्य सुविधाएँ आदि। पर्यटन के प्रचार करने की ओर भी अधिक ध्यान देने की जरूरत है ताकि लोगों को पर्यटन स्थलों की सही जानकारी मिल सके और वे इसका लाभ उठा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आनंद, उमा, गाइड टू राजस्थान, आई.टी.डी.सी., दिल्ली, 1985, पृ.सं. 4-9
2. गुप्त, संत प्रसाद, भारत में पर्यटन, कावेरी बुक हाउस, नई दिल्ली, 2008, पृ.सं. 19-21
3. गोयल, सुनील, सुरेश, पर्यटकों का स्वर्ग राजस्थान, गोयल ब्रदर्स, उदयपुर, 1985, पृ.सं. 40-42
4. पंवार, ललित के., भारतीय रेगिस्तान में पर्यावरणीय पर्यटन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2001, पृ.सं. 14-18
5. पाण्डेय, अनुपमा, पर्यटन का स्वरूप, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2007, पृ.सं. 30-31
6. व्यास, राजेश कुमार, राजस्थान में पर्यटन प्रबंध, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2004, पृ.सं. 80-81
7. शर्मा, के.के., ट्यूरिज्म इन इण्डिया - सेंट्रल स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन, क्लासिक पब्लिकेशन हाउस, जयपुर, 1991, पृ.सं. 19-21
8. शर्मा, यादवेन्द्र, राजस्थान से जान पहचान, विद्यार्थी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1991, पृ.सं. 55-56
9. शुक्ला, राजेश, रश्मि, पर्यटन भूगोल, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2001, पृ.सं. 11-12
10. सिंह, जगवीर, भारत दर्शन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ.सं. 70-72